वामदेवो गौतमः। सविता। जगती।

**तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद्वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः।**
**छर्दिर्येन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान्देवो अक्तुभिः॥ ४.०५३.०१**

असुरस्य- प्राणदस्य। प्रचेतसः- प्रकर्षचेतनस्य। देवस्य- द्योतनशीलस्य। सवितुः- सूर्यस्यात्मनः। तत्। महत्। वार्यं- वरणीयं तेजः। वृणीमहे- वरणं कुर्मः। येन- येन तेजसा। दाशुषे- दात्रे। तत्। छर्दिः- सद्म। त्मना- स्वतः। यच्छति- ददाति। महान्- महात्मा। देवः- सविता। अक्तुभिः- सर्वेषु दिनेषु। उदयान्- उदेतु॥१॥

**दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः।**
**विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुर्वजीजनत्सविता सुम्नमुक्थ्यम्॥ ४.०५३.०२**

दिवः- नभसः। भुवनस्य- पृथिव्याश्च। धर्ता- धारकः। प्रजापतिः- विशां पालकः। पिशङ्गम्- विचित्ररूपम्। द्रापिम्- कवचमावरणम्। कविः- क्रान्तदर्शी। प्रति मुञ्चते। विचक्षणः- विशेषद्रष्टा। प्रथयन्- प्रख्यापयन्। आपृणन्- आपूरयन्। सविता- सूर्यः। उरु- विस्तीर्णम्। उक्थ्यम्- श्रुतिप्रसिद्धम्। सुम्नम्- आनन्दम्। अजीजनत्- सृजति॥२॥

**आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे।**
**प्र बाहू अस्राक्सविता सवीमनि निवेशयन्प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्॥ ४.०५३.०३**

दिव्यानि पार्थिवा रजांसि- दिव्यभौमलोकान्। आप्राः- आपूरयति। देवः। स्वाय धर्मणे- आत्मधर्माय। श्लोकम्- उपासकस्य हृदये मन्त्रम्। कृणुते- प्रकाशयति। जगत्- भुवनम्। अक्तुभिः- कान्तिभिः। निवेशयन्- स्वस्वकर्मणि स्थापयन्। प्रसुवन्- प्रेरयन्। सविता- प्रेरकः। सवीमनि- प्रसवे निमित्ते सति। बाहू। प्र- प्रकर्षेण। अस्राक्- सृजति॥३॥

Dr. Rangaji

**अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद्व्रतानि देवः सविताभि रक्षते।**

**प्रास्राग्बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यौ धृतव्रतो महो अज्मस्य राजति॥ ४.०५३.०४**

अदाभ्यः- अहिंस्यः। भुवनानि- लोकान्। प्रचकाशत्- प्रकाशयति। व्रतानि- धर्मान्। देवः- द्योतकः। सविता- सूर्यः। अभि- आभिमुख्येन। रक्षते- पालयति। भुवनस्य प्रजाभ्यः- लोकस्थजनेभ्यः। बाहू। प्रास्राक्- प्रकर्षेण सृजति। महः- महतः। अज्मस्य- लोकस्य। धृतव्रतः- नियतिधारकः। राजति- प्रकाशते ॥४॥

**त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभुस्त्रीणि रोचना।**

**तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना॥ ४.०५३.०५**

सविता- सूर्यः। त्रिरन्तरिक्षम्- अन्तरिक्षत्रयम्। महित्वना- स्वमाहात्म्येन। इन्वति- व्याप्नोति। त्री रजांसि- त्रीन् लोकान्। परिभूः- परितो भवति। त्रीणि रोचना- त्रीणि ज्योतींषि व्याप्नोति। तिस्रो दिवः- द्युत्रयम्। पृथिवीस्तिस्रः- भूमित्रयम्। इन्वति- व्याप्नोति। त्रिभिर्व्रतैः- व्रतत्रयेण। त्मना- स्वतः। नः- अस्मान्। रक्षति पालयति ॥५॥

**बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी।**

**स नो देवः सविता शर्म यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः॥ ४.०५३.०६**

बृहत्सुम्नः- महानन्दः। प्रसवीता- अनुज्ञाता। निवेशनः- शरण्यः। जगतः स्थातुः वशी- स्थावरजङ्गमस्वामी। सः- असौ। नः- अस्माकम्। देवः। सविता- सूर्यः। त्रिवरूथम्- लोकत्रयात्मकम्। शर्म- मङ्गळम्। यच्छतु- ददातु। अस्मे- अस्माकम्। अंहसः- पापस्य। क्षयाय- नाशाय भवतु ॥६॥

**आगन्देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम्।**

**स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु॥ ४.०५३.०७**

Dr. Rangaji

देवः- द्योतकः। ऋतुभिः। आगन्- आगच्छतु। क्षयम्- भूमिम्। वर्धतु- वर्धयतु। सुप्रजाम्- शोभनसन्ततिम्। इषम्- सत्कामनाम्। नः- अस्मभ्यम्। सविता। दधातु- यच्छतु। सः- असौ। नः- अस्मभ्यम्। क्षपाभिः अहभिश्च- अहोरात्रैः। प्रजावन्तम्- सन्ततियुक्ताम्। रयिम्- सम्पदम्। समिन्वतु- सम्यक् प्रापयतु ॥७ ॥

Dr. Ranganji